झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

वृन्दावन लाल वर्मा

नाट्य रूपान्तर : नीलेश रघुवंशी

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

वृन्दावनलाल वर्मा

नाट्य रूपान्तर :

नीलेश रघुवंशी

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

विभा मिश्र
और
टोली के बच्चों के लिए।

सर्वाधिकार सुरक्षित : बीलेश रघुवंशी

मूल्य : 35 रुपये
पहला संस्करण 2008
पुनर्मुद्रण : अगस्त 2012

प्रकाशक
अनुराग ट्रस्ट
डी - 68, निरालानगर
लखनऊ - 226020

लेज़र टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिन्टर्स 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

दृश्य एक

(बच्चे मंच पर गीत गाते हुए प्रवेश करते हैं।)

गीत : "बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी
ख़ूब लड़ी मर्दानी
वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

दृश्य दो

(बच्चों का प्रस्थान – सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : 19 नवम्बर 1835 के दिन काशी में जन्म हुआ मनुबाई का। पिता मोरोपन्त और माता भागीरथी बाई की एकमात्र सन्तान थी हमारी मनु।... मनु चार वर्ष की ही थी जब माता भागीरथी बाई का निधन हो गया। नन्ही मनु को पिता मोरोपन्त ने बहुत प्यार के साथ पाला। बाजीराव के लड़के नाना साहब और राव साहब मनु के प्यारे सखा। तीनों सखा संग-साथ खेलते और पढ़ते। मनु की चपलता और नटखटपन के कारण सब उसे "छबीली" कहकर चिढ़ाते...। तब कोई नहीं जानता था, न बाजीराव, न मोरोपन्त, न नाना साहब, न राव साहब, न वे अश्व और न ही वे तलवारें – जिनके संग मनु किलक-किलक जाती, कि यही – यही छबीली यानी मनु यानी – झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई... एक युग होगी – होगी एक महागाथा...। आज हम देखेंगे कि कैसे बनी मनु झाँसी की रानी! कैसे-कैसे, कैसे अगर मनु न होती तो आज़ाद भारत में हमारी साँसें न चल रही होतीं...।

दृश्य तीन

(सूर्यास्त से पहले का समय... जंगल भरे रास्ते में तीन घुड़सवार तेज़ी से चले जा रहे हैं... तीनों बच्चे हैं – एक लड़की, दो लड़के। लड़कों की उम्र 15-16 और लड़की 10-12 वर्ष के लगभग। तीनों साथ चल रहे हैं कि अचानक बड़ा लड़का उनसे आगे निकल जाता है... लड़की अपने घोड़े को एड़ लगाती है –)

संवाद : देखूँ कैसे आगे निकलते हो।

(इतना कह आगे निकल जाती है। लड़की बहुत आगे निकल जाती है, बड़ा लड़का उसके साथ होने के प्रयास में हैं... कि उसका घोड़ा ठोकर खाता है और लड़का धड़ाम से गिर जाता है... बालक ज़ोर से चिल्लाता है...)

बालक : मनु, मैं मरा। मनु, मनु, मनु...

(मनु अपने घोड़े को रोकती है – और बालक के पास पहुँचती है। एक क्षण में तड़ाक से कूदती है –)

मनु : घबराओ मत, चोट बहुत गहरी नहीं है।

(इसी बीच दूसरा लड़का भी उनके पास आ जाता है –)

दूसरा : नाना तुमको तो बहुत लग गयी। मनु-मनु देखो कितना खून बह रहा है। नाना, तुम ठीक तो हो न।

मनु : नहीं चोट ज़्यादा नहीं है – मैं तुम्हें लिए चलती हूँ – कोठी पर मरहम पट्टी हो जायेगी – फिर से हम घुड़सवारी पर निकलेंगे।

(कराहते हुए।)

नाना : कैसे! कैसे ले चलोगी मनु?

मनु : तुम मेरे घोड़े पर बैठो। मैं उसकी लगाम पकड़े तुम्हें घर लिये चलती हूँ।

नाना : मेरा घोड़ा कहाँ है?

मनु : भाग गया। चिन्ता मत करो। मेरे घोड़े पर चलो तुम। सूर्यास्त होने वाला है, जल्दी करो नाना..।

नाना : मनु, मैं सध नहीं सकूँगा।

मनु : मैं साध लूँगी। उठो...

(नाना उठता है – मनु एक हाथ से घोड़े की लगाम थामती है और दूसरे से ख़ून में तर-बतर नाना को घोड़े पर बिठाती है – और ख़ुद बड़ी फ़ुर्ती के साथ उचककर पीछे बैठती है। घोड़े को एड़ लगाती है – उसके पीछे-पीछे दूसरा घुड़सवार भी गाँव की ओर चल देता है...! तीनों गाँव पहुँचते हैं – कोठी पर तैनात सैनिक उसके क़रीब पहुँचते हैं और एक बाजीराव और मोरोपन्त को ख़बर करता है – तीनों कोठी में प्रवेश करते हैं – बुज़ुर्ग बाजीराव मोरोपन्त से पूछते हैं –)

बाजीराव : क्या वे सब आ गये मोरोपन्त?

मोरोपन्त : हाँ। महाराज... अरे यह क्या? मनु और नाना – इतना लहू...? मनु कहाँ लगी बेटी?

मनु : मुझको तो बिल्कुल नहीं लगी, काका। नाना को चोट आयी है, लेकिन ज़्यादा नहीं।

(बाजीराव चोट की बात सुनकर घबरा जाते हैं –)

बाजीराव : ये सब कैसे हुआ मनु?

मनु : बहुत आसानी से हुआ ये सब। नाना घोड़े को भगा रहे थे... घोड़े ने ठोकर खायी, नाना उसे सँभाल नहीं पाये। दोनों गिर पड़े...। घोड़ा तो ऐसा भागा, ऐसा भागा कि...

(कहते-कहते मनु ज़ोर से हँसती है।)

मोरोपन्त : लेकिन मनु बेटा – तू नाना साहब को कैसे उठा लायी।

मनु : घोड़े पर बिठाकर। एक हाथ से लगाम पकड़ ली, दूसरे से नाना को थाम लिया।

(बाजीराव नाना की ओर देखकर घबराते हैं... नाना भी परेशान हैं –)

बाजीराव : अरे रे इतना ख़ून... नाना मेरे बेटे बहुत दर्द हो रहा होगा।

(मनु अचरज से उन्हें देखती है।)

दृश्य चार

(मोरोपन्त और मनु अपने घर में बैठे हुए बातें करते हैं।)

मनु : इतनी ज़रा-सी चोट पर ऐसी घबराहट और रोना-पीटना।

मोरोपन्त : बेटी चोट ज़रा-सी नहीं है – बहुत ख़ून बह गया।

मनु : आप जो क़िस्से सुनाते हैं, उसमें युद्ध क्या रेशम की डोरों और कपास की पौनियों से हुआ करते थे?

मोरोपन्त : नहीं। मनु – पर नाना साहब अभी बच्चे हैं।

मनु : बालक? अभिमन्यु भी तो बालक ही था?

मोरोपन्त : मनु, अब वह समय नहीं रहा।

मनु : क्यों काका, वही आकाश है, वही पृथ्वी है। वही सूर्य और चन्द्रमा – सब कुछ तो पहले-सा है।

मोरोपन्त : अब इस देश का भाग्य पलट गया है। अंग्रेज़ों के भाग्य का सूर्योदय हुआ है। हमारा सूर्य अस्त हो चला अब।

मनु : कोई किसी का भाग्य नहीं बनाता काका? फिर भला अंग्रेज़ों की...

मोरोपन्त : बेटी। जब तू बड़ी होगी तब समझेगी।

मनु : काका। आप हर बात को यहीं क्यों खत्म कर देते हैं।

मोरोपन्त : रात बहुत हो गयी। अब सो जा बेटी।

मनु : काका। नाना को देखकर आइये न। आपको नींद आ रही हो तो मैं देखकर आऊँ?

(काका उठकर खिड़की से कोठी की ओर देखते हैं –)

मोरोपन्त : नाना सा., सो गये बेटी। बत्ती बन्द हो चुकी है कोठी की।

(मनु करवट बदल सो जाती है – मोरोपन्त सोचते हैं –)

मोरोपन्त : मनु की बुद्धि, उसकी अवस्था। उम्र से बहुत आगे निकल चुकी है। अभी तक योग्य वर दिखायी नहीं पड़ता। दक्षिण जाकर देखना होगा...। मनु मेरी बेटी...

(प्यार से मनु के बालों को सहलाते हैं।)

दृश्य पाँच

(मनु कोठरी में प्रवेश करती है। नाना के पास जाती है –)

मनु : नींद कैसी आयी?

नाना : दर्द होता रहा सारी रात। ठीक से नींद नहीं हुई।

मनु : दोपहर तक दर्द चला जायेगा। शाम को घूमने चलोगे। जल्दी ही लौट आयेंगे।

नाना : नहीं-नहीं... दर्द और बढ़ गया तो...।

मनु : क्या हुआ – बाद में कभी गिरोगे तो बिल्कुल दर्द नहीं होगा। सहने की शक्ति बढ़ जायेगी।

नाना : और आज ही फिसल पड़ा तो?

मनु : तो मैं तुमको फिर से उठा लाऊँगी।

नाना : और अगर तुम भी गिर पड़ती तो...।

मनु : तुम तो कहते थे कीर्ति कमाओगे, दुश्मनों को ठिकाने लगा दोगे – घोड़े को इतना तेज़ भगाओगे कि लोग दाँतों तले उँगलियाँ दबा लेंगे –

(इसी बीच बाजीराव का प्रवेश)

बाजीराव : मनु तेरी बातें तो ख़त्म होने का नाम ही नहीं लेतीं। किस युद्ध और कीर्ति की बात कर रही थी बेटी।

मनु : दादा – वही बातें जो आप हमें सुनाते आये हैं।

बाजीराव : बेटी। अब उन बातों का समय नहीं रहा। अब तो महाभारत की कथाएँ सुनो – अच्छी, भली बनो। मन बहलाओ और जीवन को पवित्र सुख से सुखी बनाओ।

मनु : क्या हमारा सारा जीवन खाने और सोने में ही चला जायेगा।

(बाजीराव हँसते हैं और मोरोपन्त का प्रवेश होता है –)

मोरोपन्त : नाना साहब को हाथी पर घूम आने दीजिये **(बाहर सवारी तैयार है।)**

(मनु बाहर हाथी को देखने भागती है, उसी के पीछे मोरोपन्त भी –)

मनु : (मोरोपन्त से) काका, मैं भी हाथी पर बैठूँगी।

(उसी के पीछे बाजीराव नाना सा. और राव सा. के साथ आते हैं... हाथी की सवारी तैयार है...)

मनु (बाजीराव से) : दादा मैं भी बैठूँगी।

(नाना साहब महावत को चलने का इशारा करता है। नाना सा. के कहने

पर महावत हाथी को चलने को कहता है –)

बाजीराव : नाना सा. लिये जाओ मनु को भी।

(नाना सा. दूसरी ओर मुँह फेर लेता है।)

बाजीराव : राव सा. मनु को ले लेते तो अच्छा होता।

(राव सा. नाना की ओर देखता है – लेकिन नाना महावत को इशारे से चलने को कहता है। हाथी को जाते देख मनु मचल जाती है।)

(मोरोपन्त से)

मनु : हाथी लौटाओ काका। मैं भी हाथी पर बैठूँगी।

(बाजीराव मंच से बाहर चले जाते हैं।)

मोरोपन्त : हाथी तो चला गया बेटी?

मनु : महावत को पुकारिये, वह रुक जायेगा। मैं हाथी पर आज ही बैठूँगी – अभी इसी समय।

मोरोपन्त : तेरे भाग्य में हाथी नहीं लिखा है – क्यों ज़िद्द करती है।

मनु : मेरे भाग्य में एक नहीं दस हाथी लिखे हैं। **(मोरोपन्त हँसकर मनु को गले लगाते हैं।)**

मोरोपन्त : चल। चलकर कोई किताब पढ़ते हैं।

मनु : मैं अपने घोड़े पर बैठकर सैर को जाऊँगी और उस हाथी को तंग करूँगी।

दृश्य छह

(हाथी वापस आता है। नाना और सब कोठी में प्रवेश करते हैं।)

नाना : मनु कहाँ गयी?

बाजीराव : भीतर होगी।

राव सा. : उसे बुरा लगा होगा – मैंने तो कहा था, नाना ने साथ नहीं लिया।

नाना : वह मुझे सबेरे से चिढ़ा रही थी।

बाजीराव : क्या? कैसे?

(इसी बीच मनु आ जाती है, बाजीराव हँसते हैं और लाड़ से कहते हैं।)

नाना सा. : छबीली तुम क्या कोई ग्रन्थ पढ़ रही थी।

मनु : मुझे छबीली मत कहा करो।

नाना : क्यों भला! तुम्हारा नाम है और मुझे छबीली कहना अच्छा लगता है।

मनु : मुझे इस नाम से घृणा है।

नाना : और मुझे बहुत सुहाना लगता है – छबीली-छबीली।

मनु : मैं इसकी पुकार भी नहीं सुनना चाहती **(कहकर भागती है...)**

(बाजीराव मनु को पकड़ लेते हैं – साथ में नाना सा. और राव सा. भी पकड़ लेते हैं।)

नाना : मनु। बुरा मान गयी?

(मनु रुठते हुए मुँह फेर लेती है।)

(इसी बीच मोरोपन्त का प्रवेश, उन्हीं के पीछे सैनिक आता है –)

सैनिक : झाँसी से एक सज्जन आये हैं – तात्या नाम बतलाते हैं।

मनु : झाँसी वाला तात्या कुश्ती लड़ता होगा।

राव सा. : झाँसी राज्य है – बहुत बड़ा राज्य।

बाजीराव : हाँ हमारे पुरखों का दान किया राज्य है।

नाना सा. : हमें फिर से नहीं मिल सकता।

मनु : दान किया हुआ फिर कैसे वापस आयेगा।

बाजीराव : अब तो झाँसी पर अंग्रेज़ों की नज़र गड़ी हुई है।

मनु : दादा। थोड़े-से अंग्रेज़ों ने आप सबको कैसे दबा लिया?

बाजीराव : अंग्रेज़ लोग बहुत चालाक हैं। उनके पास हमसे अच्छे हथियार हैं... और फिर भाग्य भी उनके साथ है।

मनु : दादा। क्या भाग्य में शूरवीर होना भी लिखा रहता है।

मोरोपन्त : इस लड़की जैसा वाचाल तो कोई और होगा ही नहीं।

मनु : आप ही तो कहते हैं – ताराबाई ऐसी थीं, जीजाबाई ऐसी थीं, अहिल्या ऐसी, मीरा ऐसी।... तब ये सब क्या मुँह सीकर रहती थीं।

(सभी ज़ोर से हँसते हैं। मंच पर अँधेरा होता है और दृश्य बदलता है।)

दृश्य सात

(मंच पर तात्या दीक्षित, बाजीराव और मोरोपन्त बैठे हुए हैं –)

मोरोपन्त : मुझे अपनी बेटी मनुबाई के लिए योग्य वर की तलाश है। आपकी बड़ी जान-पहचान है, दुनिया-जहान की यात्रा करते हैं, अगर कोई योग्य वर मिले तो मेरी बेटी को याद रखियेगा।

बाजीराव : कन्या बहुत सुन्दर है। बड़ी कुशाग्र बुद्धि और होनहार। जिस घर जावेगी सुख-समृद्धि उसी के द्वारे होगी।

मोरोपन्त : मैंने उसे मराठी, हिन्दी और संस्कृत पढ़ायी है। शास्त्रों का ज्ञान है उसे। साथ ही हथियार चलाना भी जानती है। घुड़सवारी के तो कहने ही क्या?

तात्या दीक्षित : कन्या की जन्मपत्री दिखाइये।

(मोरोपन्त जन्मपत्री दिखाते हैं–तात्या दीक्षित उसे पलटते हैं, पढ़ते हैं –)

तात्या दीक्षित : ऐसी जन्मपत्री मैंने पहले कभी देखी ही नहीं। इस बालिका को तो कहीं की रानी होना चाहिए।

(मनु का प्रवेश)

बाजीराव : आओ मनु आओ। दीक्षित जी यही कन्या है। **(मनु और राव सा. उन्हें प्रणाम करते हैं।)**

(तात्या दीक्षित मनु को देखते हैं।)

तात्या दीक्षित : अवश्य ही यह किसी राज्य की रानी होगी।

राव सा. : सारे राज्य तो अंग्रेज़ों ने ले लिये हैं... नये राज्य हैं कहाँ? जो मनु रानी बनेगी?

मनु : आपकी झाँसी में सेना है?

तात्या दीक्षित : हाँ! बहुत बड़ी।

मनु : घोड़े कितने हैं?

राव : और हाथी?

तात्या दीक्षित : हाँ – बहुत सारे हैं।

(इसी समय एक युवक आता है और सबको प्रणाम करता है –)

बाजीराव : आओ – आओ तात्या।

मनु : दीक्षित जी यह हमारे अखाड़े के प्रधान हैं – इनका नाम भी तात्या है।

(सभी हँसते हैं...)

दृश्य आठ

(झाँसी का राजदरबार राजा गंगाधर राव बैठे हुए हैं – तात्या दीक्षित प्रवेश करते हैं...)

तात्या दीक्षित : महाराज की जय हो।

गंगाधर राव : आइये। दीक्षित जी। स्वागत। कहिये क्या समाचार है..।

तात्या दीक्षित : महाराज। बड़ी सुन्दर कन्या की जन्मपत्री लाया हूँ। योग रानी–महारानी के हैं... और महाराज आचरण भी महारानियों–सा है।

गंगाधर राव : अच्छा। कहाँ है ऐसी कन्या...?

तात्या दीक्षित : महाराज। आज्ञा हो तो जन्मपत्री का मिलान करूँ?

(गंगाधर राव इशारे से स्वीकृति देते हैं, तात्या दीक्षित जन्मपत्री का मिलान करते हैं – जन्मपत्री मिल जाती है...)

तात्या दीक्षित : महाराज! अद्‌भुत! ऐसे योग और गुण तो आज से पहले किसी के मिले ही नहीं। महाराज स्वीकृति दें तो मोरोपन्त को भी यह शुभ समाचार सुना दूँ।

(सब ख़ुश होते हैं और तात्या दीक्षित को बधाई देते हैं।)

गंगाधर राव : समारोह की तैयार शुरू की जाये।

दृश्य नौ

(मनु की सगाई हो रही है। मनु आभूषणों से लदी हुई है – नाना सा., राव सा., और मनु के बीच बातचीत)

नाना : अब तो मनु झाँसी से हाथियों पर बैठकर आया करेगी।

मनु : एक हाथी पर या दस पर?

नाना : एक पर बैठेगी, बाक़ी पर तो मन्त्री वग़ैरह।

मनु : लेकिन मुझे तो घोड़े की सवारी पसन्द है।

नाना : झाँसी में घुड़सवारी कर पाओगी?

मनु : क्यों? कौन रोक लेगा?

नाना : सुनते हैं, राजा बड़ा गुस्सैल है।

मनु : तो क्या सूली चढ़ा देगा।

राव सा. : अरे नहीं – पर थोड़ा झुककर चलना होगा। **(मनु पूरे कमरे का चक्कर झुकते हुए लगाती है।)**

मनु : ऐसे... ऐसे... ऐसे?

(सब ख़ूब हँसते हैं।)

नाना : मनु। तुम चली जाओगी तो बहुत सूना-सूना लगेगा।

मनु : तो साथ चले चलना।

राव : हमेशा-हमेशा के लिए।

मनु : नहीं-नहीं। बाला सा. के अखाड़े में तुमको बहुत कुछ सीखना है – अच्छी तरह से हथियार चलाना सीखो फिर...

(मनु हँसती है ख़ूब)

नाना : और फिर दिल्ली पर धावा बोल दो। जानती नहीं – सब तरफ़ अंग्रेज़ों की तूती बोलती है।

राव : तो क्या अंग्रेज़ हमको निगल जायेंगे।

मनु : (हँसते-हँसते) नाना सा. को विश्वास ही नहीं होता कि कभी अंग्रेज़ भी हराये जा सकते हैं...।

नाना : (चिढ़ते हुए) छबीली को सिवाय घमण्ड मारने के कुछ और आता ही नहीं।

मनु : फिर छबीली। आगे कभी मत कहना..।

नाना : अब तो झाँसी की रानी कहा करेंगे।

(मनु मुस्कुराती है और रानियों-सी मुद्रा में प्रणाम करती है।)

दृश्य दस

(मनु और गंगाधर राव विवाह मण्डप की ओर जा रहे हैं। बहुत बड़ी सुसज्जित सेना उनके साथ है – मनु सारी सेना और घोड़ों को देख रही है – अचानक उसके सामने एक लड़की आती है –)

मनु : तुम कौन हो?

लड़की : जी आपकी दासी – सुन्दर कहते हैं मुझे।

मनु : मेरी दासी। वो कैसे?

सुन्दर : आप हमारी महारानी हैं। आपकी दासी बनकर रहूँगी मैं।

मनु : मुझे दासी नहीं – सहेली चाहिए। क्या सचमुच मेरी सखी बनकर रहोगी जीवन-भर!

सुन्दर : जी। मेरे साथ सोलह दासियाँ, नहीं-नहीं सोलह सहेलियाँ और हैं।

मनु : तुम घोड़े पर चढ़ना जानती हो।

सुन्दर : थोड़ा-थोड़ा।

मनु : और हथियार चलाना।

सुन्दर : नहीं। सरकार कभी सीखा ही नहीं।

(इसी बीच दो-तीन लड़कियाँ और मनु के पास आती हैं। सुन्दर परिचय कराती है –)

सुन्दर : इसका नाम मुन्दर है, और इसका काशी। मेरी तरह ये भी आपकी सहेलियाँ हैं।

मनु : मैं तुम सबको घोड़े पर चढ़ना सिखाऊँगी। हथियार चलाना भी। मलखम्भ जानती हो।

(तीनों ना में सिर हिलाती हैं।)

मनु : अच्छा – गाना–बजाना जानती हो?

तीनों : सुनायें सरकार!

मनु : सरकार नहीं कहा करो। मैं तुमको दासियाँ नहीं, सखियाँ बनाकर रखूँगी। लेकिन एक शर्त है।... जो मेरे साथ रहना चाहे – उसको घोड़े की सवारी आनी चाहिए। तलवार, बन्दूक़, बर्छी, छुरी, कटार, तीर–तमंचा सब चलाना सीखना होगा।

(तीनों शर्माकर एक-दूसरे को देखती हैं।)

(गणेश मन्दिर के विवाह मण्डप में सब पहुँचते हैं। सब लोग सजे-धज हैं – विवाह की रस्में चल रही हैं। पुरोहित मनु की गाँठ गंगाधर राव से जोड़ते हैं, लेकिन उन्हें गाँठ बनाने में समय लगता है – मनु टुकुर-टुकुर सबको देख रही है – मुस्कुराती है – फिर पण्डित जी से कहती है –)

मनु : पण्डित जी। ऐसी बाँधिये कि कभी छूटे नहीं।

(पण्डित जी के साथ-साथ सारा पण्डाल खिलखिला पड़ता है, सारे स्त्री-पुरुष इस बात पर ख़ूब हँसते हैं। विवाह समारोह सम्पन्न होता है – नज़र न्योछावर की रस्मों के साथ।)

दृश्य ग्यारह

(राजा महल में प्रवेश करते हैं। रानी उनका सत्कार करती हैं – दोनों बैठ जाते हैं –)

रानी : आज नाटकशाला से जल्दी लौट आये। खेल अच्छा नहीं हुआ क्या?

राजा : खेल तो हमेशा अच्छा होता है। लेकिन आज मन नहीं लगा। एक नये खेल की तैयारी के लिए कह आया हूँ।

रानी : कौन-सा।

राजा : मृच्छकटिक।

रानी : यह क्या है?

राजा : चारुदत्त और वसन्त सेना के प्रेम की अद्भुत कहानी। आप देखने चलेंगी।

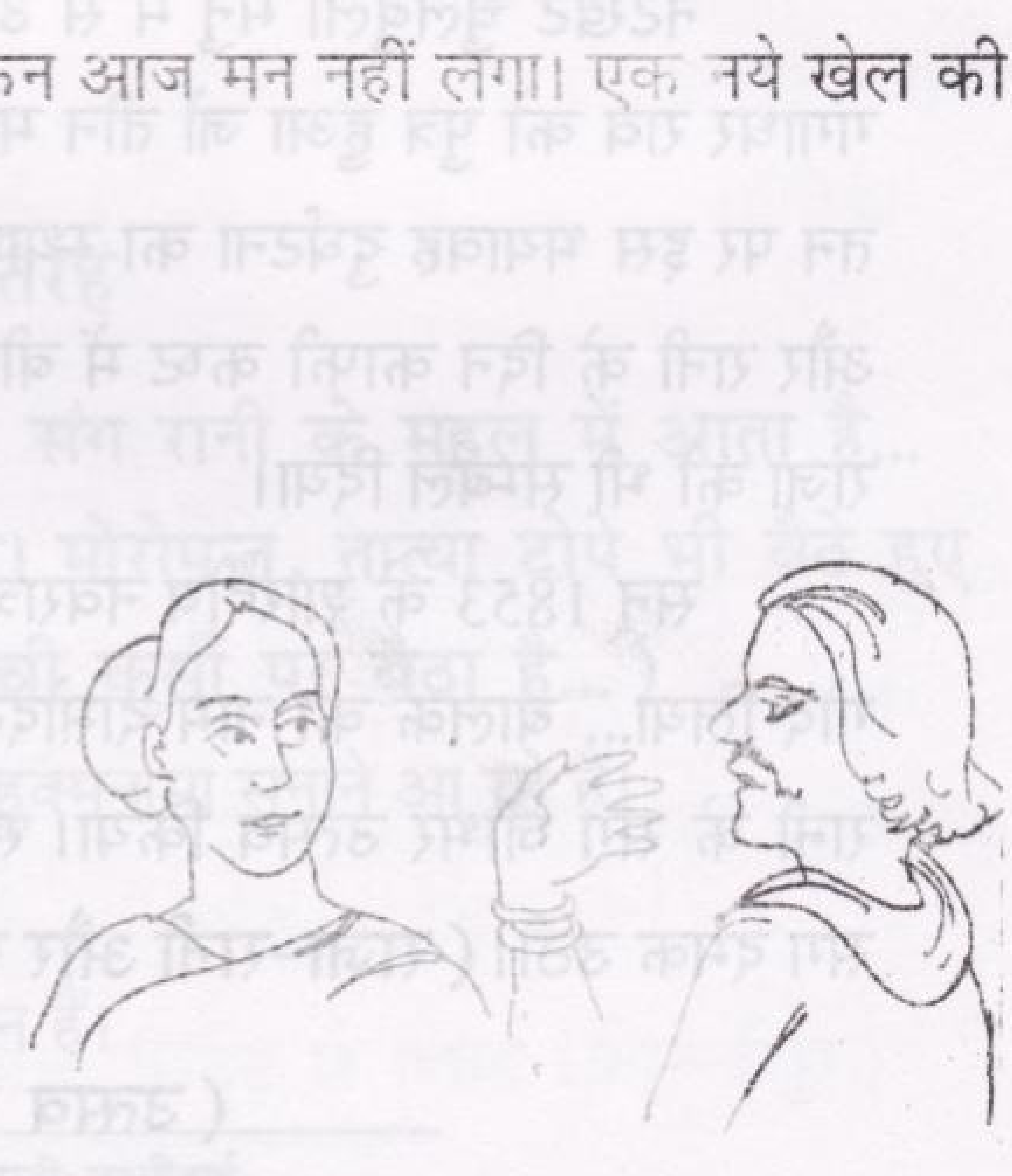

रानी : नहीं...।

राजा : घोड़े की सवारी, कुश्ती,

मलखम्भ के सिवा आपको और कुछ भी पसन्द है या नहीं?

रानी : हाँ – नाचते-गाते ही पूरे हिन्दुस्तान को अंग्रेज़ रोंदते चले जा रहे हैं...

राजा : हमारे यहाँ फूट है। और अंग्रेज़ों के पास हथियार अच्छे हैं। इसलिए उन्होंने राज क़ायम कर लिया।

रानी : हमें कौन रोकता है, अच्छे हथियार बनाने को।

राजा : क्या आपको मेरा नाटकशाला का मनोरंजन नापसन्द है?

रानी : नहीं। लेकिन अगर हम ऐसे ही मनोरंजन में डूबे रहे तो अंग्रेज़ हमारा देश हड़प कर जायेंगे...। हमें स्वराज स्थापित करना ही होगा।

दृश्य बारह

(सूत्रधार मंच पर)

सूत्रधार : और इस तरह बचपन की वो छबीली मनु लक्ष्मीबाई के विशाल आदर्शों और स्वराज की सोच में विलीन हो गयी।

नटखट चुलबुली मनु में से उभरकर आयी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई। राजा गंगाधर राव को पुत्र हुआ जो तीन महीने की आयु लेकर आया। राजा के मन और तन पर इस भयावह दुर्घटना का स्थायी कुप्रभाव पड़ा। वे अस्वस्थ रहने लगे। राजा और रानी के दिन काफ़ी कष्ट में बीतने लगे... रानी ने अपने आपको सँभाला और राजा को भी सम्बल दिया।

सन् 1853 के शारदीय नवरात्र के महोत्सव के दिन राजा ने एक बालक को गोद लिया... बालक का नाम दामोदरराव रखा गया। झाँसी की जनता ने राजा और रानी के संग जीभर उत्सव किया। सारी झाँसी दियों की झिलमिलाहट में रानी के संग दमक उठी। **(राजा-रानी और पुत्र का उत्सव)**

(उत्सव का माहौल)

(सूत्रधार पुनः मंच पर आता है –)

सूत्रधार : लेकिन काल को यह उत्सव, ये खुशी मंजूर न थी। उत्सव के बाद राजा ने अंग्रेज़ों की कम्पनी सरकार को एक पत्र लिखा। राजा ने लिखा – आप लोग दामोदर राव की नाबालगी को लेकर परेशान न हों... रानी लक्ष्मीबाई बहुत अच्छी व्यवस्था करेंगी। मुझे झाँसी के लोग बहुत प्यारे हैं – मैं चाहता हूँ कि झाँसी की जनता सुखी रहे। मैं अपनी झाँसी रानी लक्ष्मीबाई को सौंपता हूँ... कह राजा ने दामोदर राव को रानी की गोद में दे दिया। रानी मेरी झाँसी मैं तुम्हें देता हूँ... इतना कह राजा अचेत हो गये...।

(महल में हाहाकार मच गया। जिस रानी को कभी किसी ने विह्वल होते नहीं देखा था, वह करुणा के बाँध तोड़े जा रही थी..। सारी झाँसी और रानी के आँसुओं से नदियाँ सहम-सहम जा रही थीं।)

गीत

"काल गति चुपके-चुपके काली घटा घेर लायी। तीर चलाने वाले कर में कब चूड़ियाँ कब भायीं। रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी दया नहीं आयी। हाय! विधि को भी दया नहीं आयी।"

दृश्य तेरह

(अंग्रेज़ एलिस अपने अंगरक्षकों के संग रानी के महल में आता है... उसको बैठकख़ाने में बिठाया जाता है। मोरोपन्त, तात्या टोपे भी बैठे हुए हैं... दामोदर राव एक ऊँची कुर्सी पर बैठा है...)

दीवान : जनाब एलिस बड़े लाट साहब का हुक्मनामा सुनाने आ रहे हैं।

एलिस : महाराज साहब आ गयी हैं?

दीवान : जी, साहब, परदे के पीछे विराजमान हैं।

एलिस : जनरल गवर्नर साहब दामोदर राव की गोद को अस्वीकार करते हैं। और झाँसी को अंग्रेज़ों की कम्पनी के राज्य में मिलाने की घोषणा करते हैं। इसके साथ ही पाँच हज़ार रुपया मासिक वृत्ति महारानी सा. और उनके दत्तक पुत्र के लिए दी जायेगी...। और इसी के साथ...

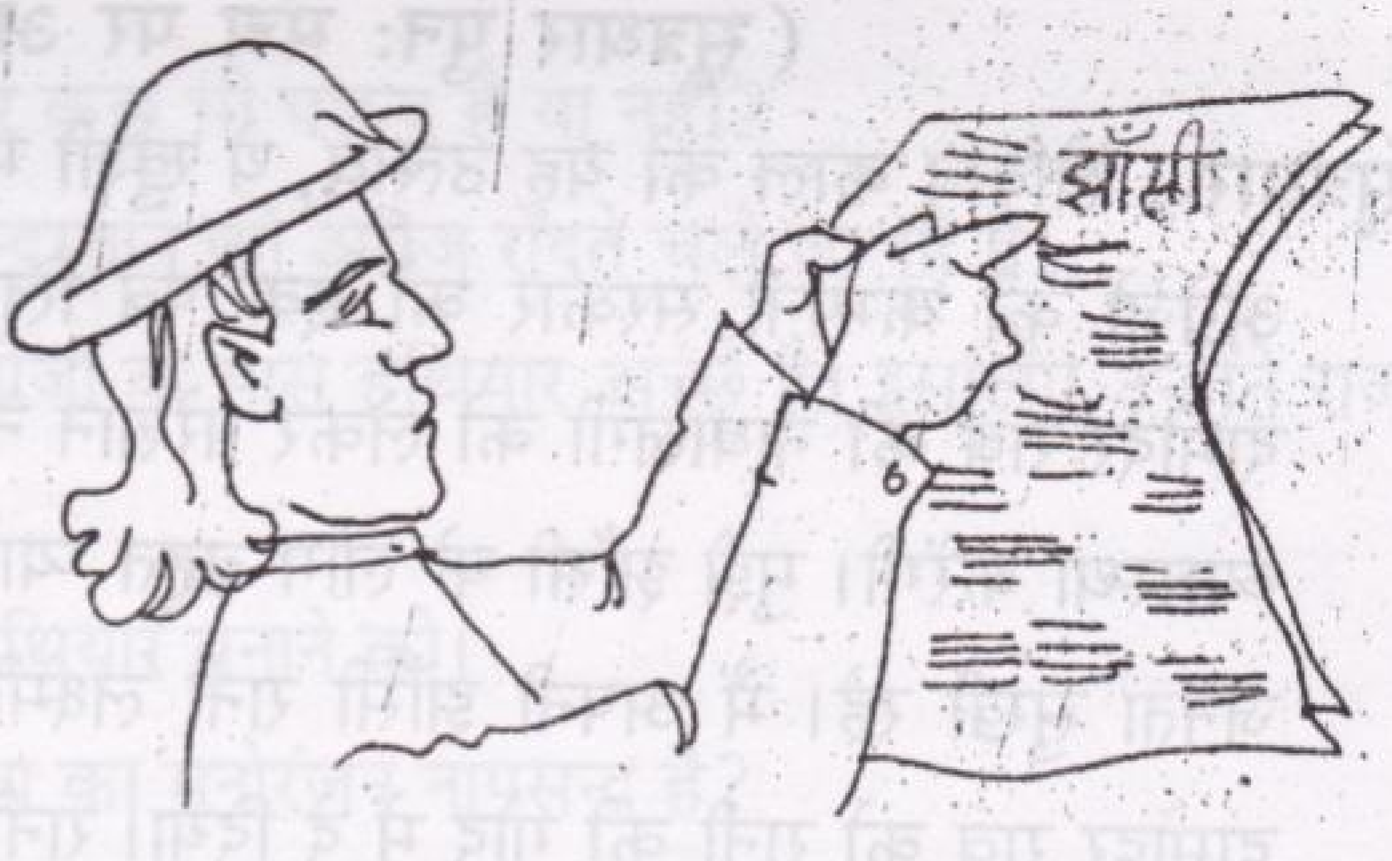

(बैठकखाने में बैठे सभी लोग हाय-हाय करते हैं। एलिस अपनी बात पूरी कर पाता इसके पहले ही लक्ष्मीबाई मंच पर आती हैं –)

रानी : मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।

एलिस : महारानी, गवर्नर जनरल ने बड़ी उदारता के साथ आपके मासिक वृत्ति का प्रबन्ध किया है।

रानी : मुझको यह वृत्ति नहीं चाहिए...। चाहे कुछ भी हो जाये। मैं अपनी झाँसी नहीं छोड़ूँगी।

दृश्य चौदह

(अंग्रेज़ों का सेवक एलिस झाँसी का अंग्रेज़ी बन्दोबस्त करना शुरू कर देता है...। दीवान से दफ़्तरों की चाभियाँ ली जा रही हैं... थाने पर अधिकार कर लिया जाता है... सारी तहसीलों को समाचार भेजा जा रहा है – डोण्डी लिखायी जा रही है...)

(सुनो-सुनो। आज से झाँसी अंग्रेज़ों के अधीन हुई। सुनो-सुनो...)

सूत्रधार : बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया।
फ़ौरन फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झण्डा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्ण जगत-जनता ने देखा।
झाँसी हुई वीरानी थी।
लेकिन...

खूब लड़ी, खूब लड़ी वह तो
झाँसी वाली रानी थी
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी...।
हम सबकी वो रानी थी...
रानी थी वो रानी थी...
झाँसी वाली रानी थी...।

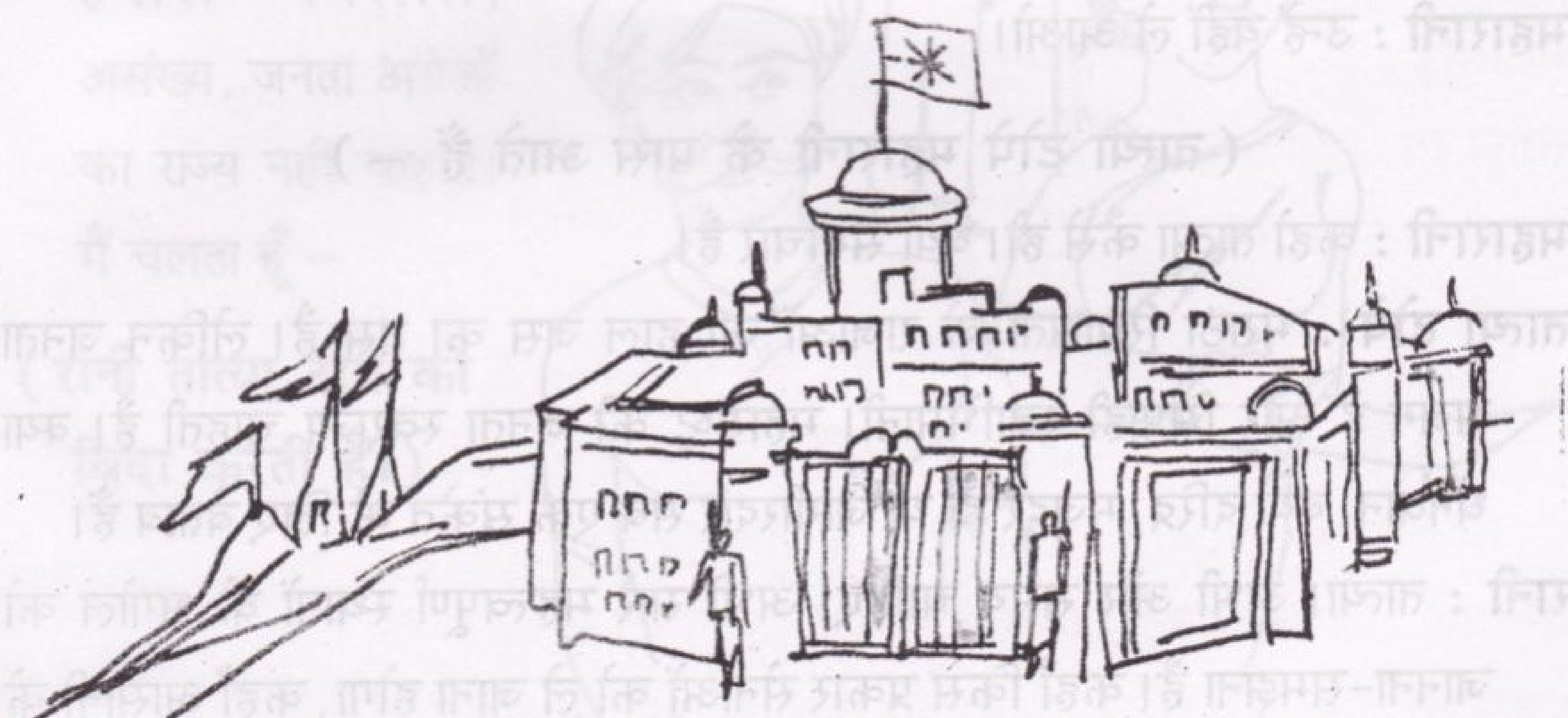

दृश्य पन्द्रह

(रानी अपनी सहेलियों के संग घुड़सवारी कर रही है – सारे व्यायाम सबको सिखा रही है। नगर की लगभग सारी स्त्रियाँ रानी के साथ हैं..। सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई भी अन्य स्त्रियों को सिखा रही हैं।)

रानी : साधारण अस्त्र, शस्त्र और व्यायाम आदि तो सभी ने सीख लिये... लेकिन अश्वारोहण और शस्त्र चलाने में हमें सर्वश्रेष्ठ होना है। साथ ही सारे झाँसी राज्य की भौगोलिक इकाइयों से भूमियों से राई-रत्ती परिचित होना है...। सुन्दर महल से पुरानी लड़ाइयों के नक़्शे तो लेकर आओ..।

(सुन्दर महल से नक़्शे लेकर आती है। रानी सबको नक़्शे समझाती है...। साथ ही बनावटी लड़ाइयों के नक़्शे काग़ज़ पर बनाती है...)

रानी : हम अपना सारा समय युद्ध जीत पर देंगे। अपनी आख़िरी साँस तक हम अंग्रेज़ों की मनमानी नहीं होने देंगे। हमें स्वराज लाना है...।

(इसी बीच व्यायामशाला में तात्या टोपे का प्रवेश होता है...)

दासी : महारानी। तात्या टोपे पधारे हैं...।

महारानी : उन्हें यहीं ले आओ।

(तात्या टोपे महारानी के पास आते हैं –)

महारानी : कहो तात्या कैसे हो। क्या समाचार है।

तात्या टोपे : मराठा रियासतों के राजाओं का हाल जस का तस है। लेकिन जनता सजग है और सिपाही स्वाभिमानी। महाराष्ट्र की जनता स्वराज्य चाहती है। क्या धनवान, क्या दरिद्र, मज़दूर हों या जागीरदार सब एक संकेत के लिए बेताब हैं।

रानी : तात्या। अभी और समय चाहिए। अभी सारे महत्त्वपूर्ण स्थानों के भूगोल को जानना-समझना है। कहाँ किस प्रकार सेनाओं को ले जाना होगा, कहाँ आसानी के

साथ युद्ध किया जा सकता है। इन सबके लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता है। हमें अच्छे घोड़े और जानवर चाहिए। तोपें, बन्दूक़, बारूद, गोला, इत्यादि सामग्री को बनाने के लिए सर्वश्रेष्ठ कारीगर चाहिए।

तात्या : मैंने नाना साहब और राव सा. के साथ इन सब बातों पर भी सलाह–मशविरा किया है।

रानी : और लड़ाइयों के नक़्शों का अध्ययन कियां?

तात्या : मैं सारी लड़ाइयों के नक़्शों का अध्ययन भलीभाँति कर चुका हूँ।

रानी : हमें एक विश्वसनीय जासूस विभाग की भी आवश्यकता होगी।

तात्या टोपे : कैसे? कहाँ?

रानी : यहीं। मेरी तीनों सहेलियाँ ये काम सीख रही हैं और भी स्त्रियों को शीघ्र ही तैयार करूँगी।

तात्या टोपे : आपके साथ-साथ मैं भी समय की प्रतीक्षा में हूँ। हमारी विशाल, असंख्य, जनता अंग्रेजों का राज्य नहीं चाहती। मैं चलता हूँ –

(रानी तात्या टोपे को विदा करती हैं।)

दृश्य सोलह

(रंगशाला का दृश्य। मोतीबाई रिहर्सल कर रही है। पीर अली रंगशाला में प्रवेश करता है।)

पीर अली : नवाब सा. तशरीफ़ लाये हैं।

मोतीबाई : यहाँ?

(नवाब सा. आ जाते हैं।)

नवाब सा. : मैंने रंगशाला में आपकी कला का कमाल देखा है। आज फिर से वही कमाल देखना चाहता हूँ। कभी आप महलों में जाती हैं?

मोतीबाई: जाती हूँ? रानी साहब भजन सुनती हैं। उनको मीरा के भजन बहुत पसन्द हैं।

(पीर अली उनकी बातें सुन रहा है।)

नवाब सा. : अच्छा। महल में और कौन लोग आते-जाते हैं।

मोतीबाई : बहुत लोग आते-जाते हैं सरकार।

नवाब सा. : सुना है रानी ने पर्दा छोड़ दिया है। लगता है पहाड़ों और नदियों में घूमने में उनको मज़ा आता है। क्या उन्होंने तुम्हें घोड़े की सवारी नहीं सिखायी?

मोतीबाई : हाँ... सब स्त्रियों को वह घुड़सवारी सिखा रही हैं।

नवाब सा. : मोतीबाई हम तुम्हारा पूरा ख़याल रखेंगे। तुम्हें जब जिस चीज़ की ज़रूरत हो निःसंकोच कहना।

(मोतियों का हार देते हैं...)

अभी ये मोतियों का हार लो। मैं तुम्हें जितनी चाहो उतनी जायदाद दूँगा – बस महल और रानी की हर ख़बर मुझे मिलनी चाहिए।

मोतीबाई : ज़रूर सरकार। सरकार मेरे महल जाने का समय हो रहा है।

नवाब सा. : हाँ-हाँ। ज़रूर जाइये। पीर अली आपको महल तक छोड़ आयेंगे।

(पीर अली के साथ मोतीबाई महल जाती है –)

पीर अली : मोतीबाई नवाब सा. की बातों का ख़याल रखना।

(महल के बाहर तक पीर अली छोड़ता है –)

मोतीबाई : पीर अली सा. आपके दिमाग़ और ख़यालों की दाद देती हूँ मैं। बिल्कुल गोरे अंग्रेज़ों जैसा दिमाग़ पाया है आपने।

दृश्य सत्रह

(मोतीबाई महल में जाती है। रानी को प्रणाम करती है। मीराबाई का भजन सुनाती है –)

भजन

बादल देख डरी
हो स्याम। मैं बादल देख डरी
काली-पीली घटा ऊमरी, वरस्यो एक धारी
जित जाऊँ जित पाणी-पाणी, हुइ-हुइ भोम हरी
जा का पिय परदेस बसत है, भीजै बाहर खरी
मीरा के प्रभु गिरधार नागर! कीज्यो प्रीत खरी!

(भजन सुनाने के बाद...)

मोतीबाई : सरकार के विरुद्ध जासूस पैदा हो गये हैं।

रानी : कौन है मोती?

मोती : नवाब अली बहादुर और पीर अली।

रानी : मुझे इन पर पहले से ही सन्देह था। क्या बात हुई?

(मोतीबाई दृश्य सोलह की घटना रानी को हाव-भाव और संगीत के

माध्यम से सुनाती है।)

रानी : मोतीबाई। तुम्हें खुदाबक्श पर भी ध्यान रखना होगा। अच्छा दुर्गा और जूही कुछ कर सकी या नहीं?

मोती : हाँ सरकार। दुर्गा फ़ौज के अफ़सरों के सामने नाचना-गाना प्रदर्शित कर उनके भेद ले रही है। और जूही हमेशा उसी के संग रहती है।

(रानीबाई को प्रणाम कर मोतीबाई चली जाती है।)

रानी : मुझे तुम सब पर पूरा भरोसा है।

दृश्य : अठारह

(सूत्रधार मंच पर)

सूत्रधार : मेरठ और दिल्ली की सम्मिलित हिन्दुस्तानी फ़ौज ने दिल्ली के लाल क़िले पर अधिकार कर लिया। बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र को भारत का सम्राट घोषित किया और इक्कीस तोपों की सलामी दी गयी। बादशाह ने क्रान्ति का नेतृत्व स्वीकार किया। इसी के साथ मई के महीने में लगभग सारे उत्तर हिन्द में क्रान्ति

की आग भड़क उठी। झाँसी भला इससे कैसे अछूती रहती। आग कई-कई रूपों में झाँसी को झुलसा रही थी...। सिपाही पीछे हटने को तैयार न थे... अंग्रेज़ सरकार को पीछे हटना ही पड़ा...। झाँसी की जनता और सिपाहियों ने रानी को राज का ज़िम्मा सौंप दिया। "राज हो तो महारानी लक्ष्मीबाई का। जैसे नारों से झाँसी गूँज उठी।... और क़िले पर भारतीय झण्डा फहरा दिया गया। पदाधिकारी नियुक्त किये गये। लक्ष्मणराव प्रधानमन्त्री, प्रधान सेनापति दीवान जवाहर सिंह। पैदल सेना के तीन कर्नल – दीवान रघुनाथ सिंह, मुहम्मद जमा खाँ और खुदाबक्श। घुड़सवारों की प्रधान स्वयं रानी, कर्नल – सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई। तोपख़ाने का प्रधान ग़ुलाम गौसखाँ, नवाब दीवान दुल्हाजू। और जासूसी विभाग मोतीबाई के हाथ में – संग में जूही। पुलिस, माल विभाग, इत्यादि में भी कर्मचारी नियुक्त किये गये।

लेकिन – कुछ समय बाद...

जनरल रोज़ की सेना अग्नि बरसाती हुई 12 मार्च सन् 1858 को हिन्दुस्तान के मुख्य गढ़ों को पराजित करती हुई झाँसी की ओर बढ़ने को आतुर थी – लेकिन जनरल रोज़ ने झाँसी पर चढ़ाई करने से पहले रानी लक्ष्मीबाई के पास एक सन्देश भेजा...

"आप अपने दीवान लक्ष्मणराव, लाला भाऊ बख्शी, मोरोपन्त ताम्बे, दीवान जवाहर सिंह, दीवान रघुनाथ सिंह, कुँवर खुदाबक्श और मोतीबाई के साथ निशस्त्र चली आवें अन्यथा कठोर और भयंकर परिणाम के लिए तैयार रहें। लेकिन रानी इसके लिए तैयार न हुई। लड़ेंगे हम अपनी झाँसी के लिए – स्वराज्य को हासिल करके ही रहेंगे।

"बुन्देलों हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी ख़ूब लड़ी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

दृश्य उन्नीस

(जनरल रोज़ की सेना झाँसी के पास है – जगह-जगह तम्बू तने हुए हैं। इस सेना को रानी लक्ष्मीबाई और उनकी सहेलियाँ दूरबीन से देख रही हैं।)

मोतीबाई : रानी साहिबा इन पर हमला कर दिया जाये तो सारे तम्बू-कनात तितर-बितर हो जायें।

रानी : नहीं। इन तम्बुओं के आस-पास तोपें लगी हुई हैं। हमें लड़ाई क़िले के भीतर से लड़नी होगी।

मोतीबाई : नाना सा. और राव सा. के पास सन्देश भिजवा दीजिये।

रानी : हाँ। जूही को सवार के साथ भेजते हैं।

(सूत्रधार मंच पर...)

सूत्रधार : रानी ने तलवार खींच ली,

हुआ द्वन्द्वअसमानों में...।

(मंगलवार 23 मार्च को जनरल रोज़ ने झाँसी पर हमले की आज्ञा दी... युद्ध आरम्भ हो जाता है।)

(युद्ध का बिगुल)

(युद्ध का दृश्य। मंच पर दोनों तरफ़ तोपें हैं – एक ओर अंग्रेज़, दूसरी ओर झाँसी की सेना...। भयानक गोलाबारी होती है... जिसमें अंग्रेज़ों के कई ठिकाने ध्वस्त हो जाते हैं...। झाँसी की रानी और उनकी सहेलियाँ अंग्रेज़ी सेना को बुरी तरह से पछाड़ रही हैं। मंच पर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और उनकी सेना – अंग्रेज़ों के साथ – युद्ध चल रहा है...

सूत्रधार गाते हुए –)

सूत्रधार : "सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।"

"इस स्वतन्त्रता महायज्ञ में कई वीरवर आये काम
नाना धूधूपन्त, तातिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवर सिंह सैनिक अभिराम
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनमें नाम।"

"चमक उठी सन् सतावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी ख़ूब लड़ी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।"

दृश्य बीस

(युद्ध जारी है – रात का समय है। क़िले के ऊपर का स्थान – जहाँ से तोपें चलायी जा रही हैं – सुन्दर और दुल्हाजू के नियन्त्रण में।)

दुल्हाजू : सुन्दर। आज मैं बहुत थक गया हूँ। सारा शरीर टूट रहा है।

सुन्दर : आप विश्राम करिये। मैं सँभाल लूँगी।

दुल्हाजू : सुन्दर। तुम बहुत प्रबल हो। और अत्यन्त सुन्दर भी।

सुन्दर : इसका मेरे पास कोई जबाव नहीं। प्रकृति ने जैसा बनाया, वैसी हूँ।

दुल्हाजू : तुम तो महल की रानी होने के योग्य हो।

सुन्दर : रानी तो एक ही है – और एक ही हो सकती है।

दुल्हाजू : मैं तुम्हें अपनी रानी बनाना चाहता हूँ। क्या कहती हो।

सुन्दर : यही कि आप बहुत नीच और गिरे हुए इंसान हैं।

दुल्हाजू : सुन्दरबाई मैं तुमसे परम प्रसन्न हुआ। मैंने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए ही यह सब कहा था।

सुन्दर : हर्ष है कि आपकी परीक्षा शीघ्र समाप्त हो गयी।

(दुल्हाजू की आँखों में क्रोध की लपटें भभकती हैं –)

दुल्हाजू : मैं जा रहा हूँ। कल सबेरे आ जाऊँगा।

(सुन्दर पुनः अपने काम में तल्लीन हो जाती है।)

दृश्य इक्कीस

(सुन्दर रानी लक्ष्मीबाई को दुल्हाजू से हुई वार्तालाप सुनाती है – थोड़ी देर बाद दुल्हाजू को रानी बुलवाती हैं।)

रानी : दुल्हाजू जहाँ कहीं भी हों, तत्काल बुलाकर लाओ।

सेवक : जी रानी साहिबा।

(दुल्हाजू आते हैं।)

रानी : दुल्हाजू। अबकी बार तुमको क्षमा किया। अपना काम करो। ऐसा ओछापन फिर कभी न करना।

(रानी और सुन्दर चली जाती हैं। दुल्हाजू इस अपमान से तिलमिला जाते हैं। इसी बीच पीर अली आते हैं –)

पीर अली : दीवान साहब, आप तो बहुत कठिन परिश्रम करते हैं।

दुल्हाजू : मेरे परिश्रम का कोई मूल्य आँका जायेगा। इसमें मुझे सन्देह है।

पीर अली : सुना है, रानी साहब तो खुले हाथ इनाम देती हैं। गुलाम गौस को सोने के कड़े, अपनी तौल-भर चाँदी का तोड़ा और कुँवर का खिताब बख्शा है।

दुल्हाजू : बख्शा होगा। रानी तो पठानों की हेकड़ी पर ही प्रसन्न हो जाती हैं। मुझे तो आज तक कुछ नहीं मिला।

पीर अली : मेरे साथ भी यही हाल है।

दुल्हाजू : और तो और रानी ने और उस सुन्दर ने मेरा ऐसा अपमान किया है कि...

पीर अली : लेकिन मैंने रास्ता खोज लिया है।

दुल्हाजू : वो क्या?

पीर अली : मैं जनरल रोज़ से मिल आया हूँ। सीधे-सीधे कह दिया मैं अंग्रेज़ों का जासूस बनना चाहता हूँ।

दुल्हाजू : और जनरल मान गया?

पीर अली : क्यों न मानता। सारी ख़बरें जो देता हूँ।

दुल्हाजू : मैं भी जनरल के पास चलना चाहता हूँ।

पीर अली : यदि रानी सा. को ख़बर लग गयी तो?

दुल्हाजू : तो जो हाल आपका होगा, वही मेरा भी।

पीर अली : मैं तो जासूस हूँ।

दुल्हाजू : तो मुझे भी उसी रंग में रँग लीजिये, वैसे भी रानी साहिबा और उनकी सहेलियाँ अंग्रेज़ों को हरा नहीं सकतीं।

पीर अली : दिमाग़ तो आपने भी मेरे जैसा पाया है। शुभ काम में देरी किस बात की। आज रात ही जनरल रोज़ के पास चलते हैं।

दुल्हाजू : ज़रूर। ज़रूर।

दृश्य बाईस

(बरहामुद्दीन सागर खिड़की की तोप सँभाले हुए हैं – उसी के पास पीर अली आता है –)

पीर अली : बरहामुद्दीन। आज बहुत-सी बातें जानने के लिए अंग्रेज़ छावनी जाना है।

बरहामु : अकेले ही जाइयेगा? बड़ा ख़तरनाक काम है।

पीर अली : अकेला ही जाऊँगा। दो आदमी होने से ख़तरा बढ़ जायेगा।

(पीर अली जाता है – थोड़ी दूर से उसके साथ दुल्हाजू हो जाता है। लेकिन बरहामुद्दीन को केवल परछाईं दिखती है – वह दुल्हाजू को पहचान नहीं पाता। शक के चलते वह उनका पीछा करता है। पीर अली और दुल्हाजू अंग्रेज़ छावनी में जाते हैं। वहाँ तैनात मन्त्री को पीर अली "कोड वर्ड" बताता है। उनका प्रवेश होता है।)

जनरल रोज़ : पीर अली, तुम्हारे साथ आया ये आदमी कौन है?

पीर अली : दीवान दुल्हाजू ठाकुर सा.। ओरछा फाटक का तोपख़ाना इन्हीं के पास है।

जनरल : आप क्या काम करोगे। दीवान सा.?

दुल्हाजू : जो कहा जाये।

पीर अली : यह सच्चे आदमी हैं। गंगाजली की सौगन्ध लेंगे।

जनरल : सिपाही। जल्द ही लोटा भर लाओ।

(जल आता है।)

"गंगाजी की सौगन्ध खाइये।"

पीर अली : सौगन्ध ले लीजिये दीवान सा.

दुल्हाजू (काँपते हाथों से) : गंगाजी मुझको मारे, जो मैं बेईमानी करूँ?

जनरल : बेईमानी किसके साथ? शपथ लो कि कम्पनी सरकार के साथ, अंग्रेज़ों के

साथ बेईमानी नहीं करूँगा।

(शपथ लेते हैं।)

पीर अली : ये क्या कर रहे हैं? दीवान सा. जल्दी सौगन्ध ले लीजिये।

दुल्हाजी : कम्पनी सरकार के साथ, अंग्रेज़ों के साथ बेईमानी नहीं करूँगा।

(कहकर लोटा नीचे रख देते हैं।)

जनरल : ऐसे नहीं। गंगाजल हाथ में लीजिये और कहिये कि ओरछा फाटक का तोपख़ाना या तो बेकार कर देंगे या तोपख़ाने से गोला नहीं छोड़ेंगे और ओरछा फाटक अंग्रेज़ों के हवाले कर देंगे।

दुल्हाजू : जी, सरकार। (**शपथ लेता है।**)

(दुल्हाजू शपथ लेता है।)

पीर अली : हुज़ूर को ईनाम भी इसी समय बतला देना चाहिए।

जनरल : दो गाँव जागीर में दीवान साहब हमेशा-हमेशा के लिए।

पीर/दुल्हाजू : कब?

जनरल : जब हम झाँसी पर अधिकार करके शान्ति स्थापित कर लेंगे।

दुल्हाजू : लेकिन मुझे यह काम कब करना होगा?

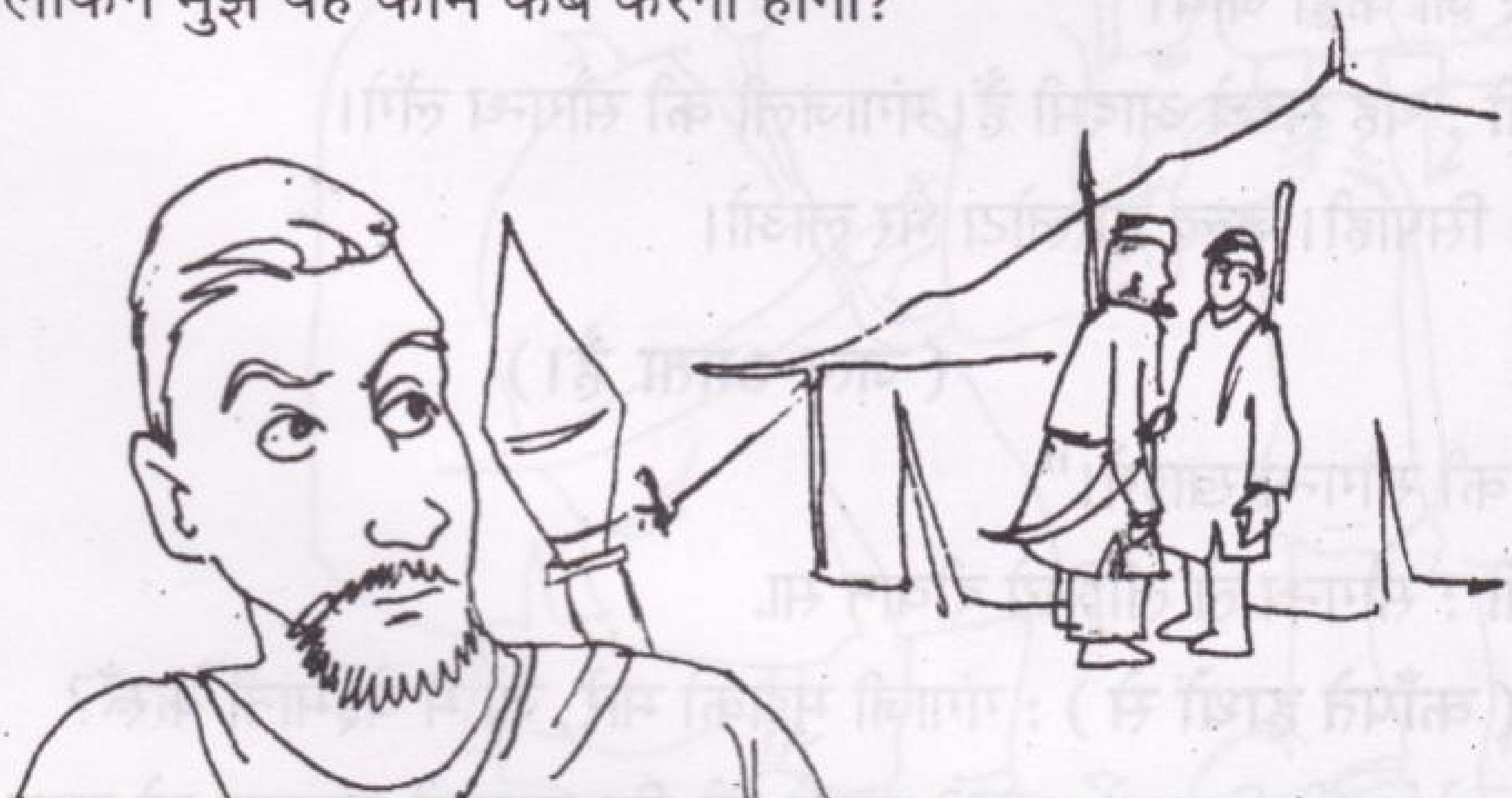

जनरल : जब हमारे मोर्चे के पीछे लाल झण्डा देखो। लेकिन जब तक लाल झण्डा न देखो, तब तक गोले टेकड़ी के नीचे हिस्से में लगे, हमारे तोपख़ाने का गोला भी तुम्हारे ऊपर न गिरेगा – या तो दीवार की जड़ पर पड़ेगा या तुम्हारे बग़ल में जो ऊँचाई पर बुर्ज है, उस पर पड़ेगा। यदि तुमने हमारे साथ बेईमानी की तो सबसे पहले तुमको फाँसी दी जायेगी।

जनरल : पीर अली, कुछ औरतें हाथ आ सकती हैं?

पीर अली : तौबा-तौबा। झाँसी की औरतें पूरी शैतान हैं। एक नाचने वाली मेरे पहचान की है, लेकिन वह जासूसी महकमे की प्रधान है और तोप भी चलाती है।

जनरल : डांसिंग गर्ल... ये मगर। **(नाचने वाली गोल दाग)** क्या नाम है उसका?

(दाँत किटकिटाते हुए...)

दुल्हाजू : मोतीबाई और दूसरी वो सुन्दर।

(पीर अली और दुल्हाजू अंग्रेज़ छावनी से निकलते हैं – वहाँ गली में बरहामु बैठा हुआ है।)

पीर अली : सरकार। हुक्म करें तो अपने काम पर जायें।

जनरल : हूँ...।

(बरहामुद्दीन दोनों को देख लेता है।)

दृश्य : तेईस

(रानी सा. अपने दीवान और सैनिकों के साथ मोर्चे पर व्यस्त हैं – वे सारी जगहों का मुआयना कर रही हैं – कि बरदामुद्दीन आता है –)

बरहामुद्दीन : पीर अली से होशियार हो जायें सरकार। वह रात को अंग्रेज़ छावनी में जाते हैं?

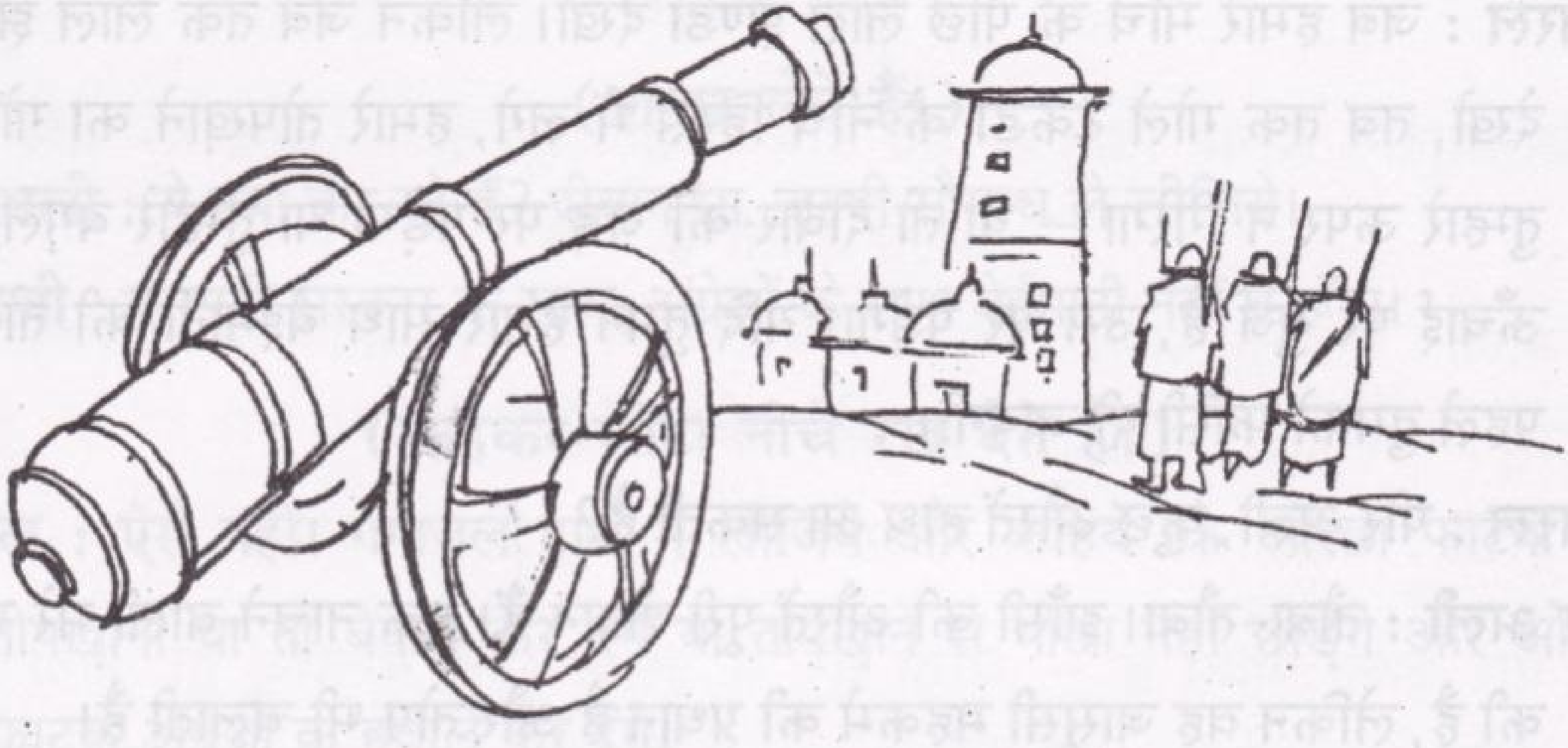

रानी : तुमको कैसे मालूम?

बरहामु : मैं पीछे–पीछे गया था...। यह इशारे से बात कर अंग्रेज़ छावनी में जाते हैं – लेकिन मुझे अंग्रेज़ मन्त्री ने जाने नहीं दिया। यह पहले दिन की बात है सरकार कल रात से किसी दीवान सा. को ले गये थे – आते में उनसे कह रहे थे दीवा सा., लाल झण्डे वाली बात याद रखना। हुज़ूर इसमें दगा है, द्रोह है।

(इसी बीच दूसरे दीवान – रानी के पास आते हैं और शहरी प्रबन्ध देख की बात करते हैं।)

रानी : हूँ। तुम अपना काम करो। बरहामु हम सब देख लेंगे।

(रानी और दीवान जवाहर सिंह और मोतीबाई घोड़े से आगे की ओर जाते हैं।)

जवाहर सिंह : सरकार। पठान सही कहता है। पीर अली की जाँच होनी चाहिए।

मोतीबाई : रानी साहिबा, पीर अली के साथ दुल्हाजू गये होंगे। आप उनसे गुस्सा ज हुए थीं...।

रानी : मोतीबाई – आज़ से दुल्हाजू के साथ तोपख़ाने पर सुन्दर रहा करेगी।

दृश्य चौबीस

(दूरबीन से रानी और मोतीबाई देख रही हैं – ओरछा फाटक के सामने लाल झण्डा उठ रहा है।)

मोतीबाई : सरकार। मुझको इस ओर जाने दीजिये। सुन्दर अकेली है।

रानी : जाओ। मोती। हीरा बनकर लौटना।

(गोरे फाटक की ओर बढ़ रहे हैं – ख़ुदाबख्श और मोतीबाई – उन्हें खदेड़ते हैं।)

ख़ुदाबख्श : मोतीबाई। आज मैं अपने देश, अपनी रानी का नमक अदा करूँगा...।

(दोनों तोपें चलाते हैं – दौड़ते हैं, पत्थर बरसाते हैं – उनके साथ और सैनिक आ जाते हैं... अंग्रेज़ पलटन उल्टे पाँव लौटती है। जनरल रोज़ दूरबीन से अपनी पलटन को भागते देख ग़ुस्से में दूरबीन फेंकता है – पाँव पटकता है।)

दृश्य पच्चीस

(रानी क़िले से देख रही हैं कि ओरछा फाटक का तोपख़ाना बहुत धीमे काम कर रहा है।)

रानी : रामचन्द्र देशमुख तुरन्त ओरछा फाटक पर जाओ। और जाकर मालूम करो कि तोपख़ाना ठीक से काम क्यों नहीं कर रहा है – वहाँ दीवान दुल्हाजू होंगे।

देशमुख : जी। सरकार।

(मोतीबाई और ख़ुदाबख़्श)

मोतीबाई : रानी सा. ओरछा फाटक की टेक के पीछे लाल झण्डा ऊँचा होता जा रहा है।

(सुन्दर और दुल्हाजू तोपख़ाने पर हैं – दुल्हाजू ने भारी तोपों पर बारूद भर रखे हैं।)

सुन्दर : आज इन तोपों को क्या हुआ...?

दुल्हाजू की सारी तोपें... ओ ओ...

दुल्हाजू ये क्या किया तुमने। **(दाँत किटकिटाती है...)**

(ओरछा फाटक के पीछे से गोरी पलटनें आती हैं और हुर्रा कहती हुई फाटक पर दौड़ती है – दुल्हाजू बुर्ज से नीचे उतरता है – सुन्दर भी उसके पीछे जाती है – उसके पास सिर्फ़ तलवार है – वह दुल्हाजू के पीछे-पीछे जाती है, लेकिन दुल्हाजू फाटक के पास पहुँचता है। फाटक पर पड़े तालों को लोहे की मोटी छड़ से तोड़ता है – एक-एक कर सारे ताले टूटते जाते हैं – वह फाटक को खोलता ही है कि सुन्दर आ जाती है।)

सुन्दर : देशद्रोही नमक के कीड़े। तू अंग्रेज़ों से कुछ भी नहीं पा पायेगा।

(दुल्हाजू पर तलवार लिये भिड़ पड़ती है – तलवार आधी टूट जाती है – आधी सुन्दर के हाथ में है – वह दुल्हाजू पर लगातार वार कर रही है – इतने में गोरी पलटन सुन्दर को गोली मारती है। एक के बाद एक कई गोलियाँ सुन्दर को लगती हैं... एक अंग्रेज़ सैनिक दुल्हाजू पर बन्दूक़ तानता है – लेकिन अफ़सर उसको रोकता है।)

अफ़सर : नो। नो। यह अपना आदमी है।

(अफ़सर सुन्दर के शरीर को जूते से ठोकर मारता है।)

अफ़सर : यह रानी है।

दुल्हाजू : नहीं। उसकी नौकरानी है।

अफ़सर : ओह। सिपाही है।

दृश्य छब्बीस

(रानी अपनी सेना के साथ हैं – मोतीबाई, देशमुख। ख़ुदाबख्श की लाश घोड़े पर है...)

देशमुख : सुन्दर?

मोतीबाई : ओरछा फाटक पर मारी गयी। दुल्हाजू ने देशद्रोह करके फाटक खोल दिया।

रानी सा. : जीवन में यही भारी धोखा खाया। बरहामुद्दीन कहाँ है देशमुख।

देशमुख : सरकार। सुन्दर, ख़ुदाबख्श के साथ-साथ बरहामुद्दीन भी...।

(रानी घोड़े पर सवार हो दूरबीन से झाँसी देखती हैं...)

रानी : हम उनके बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देंगे।

(रानी घोड़े पर सवार मंच का चक्कर लगाती है। सूत्रधार प्रवेश

करता है –)

सूत्रधार : जनरल रोज़ नगर के बुर्ज पर बुर्ज अपने अधिकार में करता जा रहा था। सारे झाँसी शहर में गोरे फैलते जा रहे थे। झाँसी में हाहाकार मच रहा था...? रानी ने देखा कि शहर वाले महल, नाटकशाला, विशाल पुस्तकालयों को अंग्रेज़ घेरते जा रहे हैं... झाँसी के सैनिक बेचैन हैं, फिर भी लड़ रहे हैं। रानी बुर्ज से नीचे उतरी...

(सूत्रधार मंच से जायेगा और रानी आयेगी।)

रानी : झाँसी का सर्वनाश होने को है। बहुत दूर है स्वराज्य की स्थापना। कर्म करने मात्र का अधिकार है हमें, फल से हमको क्या? **(रानी अपने दीवान और सैनिकों को पुकारेगी – वे सब मंच पर आते हैं।)** बाहर निकलकर लड़ो गोरों को शहर से निकालो और झाँसी की रक्षा करो। जल्दी करो समय बहुत कम है।

(सारी सेना शहर में बढ़ती जाती है, और... युद्ध का दृश्य)

(अंग्रेज़ सेना शहर में घुसी आ रही है, रानी अपनी सेना के साथ उन पर धावा बोलती हैं – अंग्रेज़ पीछे हटते हैं – रानी की तलवार के आगे कोई नहीं ठहर पाता।)

रानी : (सैनिकों से) आज प्रमाणित कर दो कि हिन्दुस्तानी सिपाही की तलवार के सामने संसार का कोई योद्धा नहीं टिक सकता।

(रानी अपनी सेना के साथ बढ़ी जा रही हैं – अंग्रेज़ लगातार गोली-बारी कर रहे हैं... रानी आगे बढ़ती इसके पहले वृद्ध नाना झोपटकर उनके पास आते हैं।)

नाना झोपटकर : पहले आप मेरा वध करिये, फिर गोली खाइये।

रानी : नाना साहब। यह क्या?

नाना : आप देखती नहीं हैं, गोरे मकानों की आड़ से गोली चला रहे हैं और आपके

सैनिक हताहत हो रहे हैं। आप पर गोली पड़ी कि झाँसी डूबी। अभी अपने हाथ में क़िला है। लड़ाई जारी रखी जा सकती है। लौटिये या मेरा वध करिये।

गुल मुहम्मद : सरकार। नाना ठीक कहते हैं।
हमें झाँसी को बचाना होगा।

(रानी जाती है और नाना झोपटकर सिपाहियों के साथ लड़ता है।)

दृश्य सत्ताइस

(सूत्रधार मंच पर आता है –)

सूत्रधार : अंग्रेज़ों ने सारे शहर को अपने क़ब्ज़े में ले लिया। महल की एक-एक इंच भूमि के लिए युद्ध हुआ...। इसके बाद जो कुछ हुआ उसने विज्ञान के सभ्य युग को मुँह चिढ़ाया। कलाओं के विशाल पुस्तकालय को आग लगा दी गयी। रानी ने महल, अस्तबल, पुस्तकालय को धू-धू कर जलते देखा... और

"बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
ख़ूब लड़ी, ख़ूब लड़ी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

(रानी मंच पर मुन्दर के साथ)

रानी : मुन्दर, मुन्दर मेरी प्यारी झाँसी की यह दुर्गति,
मेरे जीते जी। मेरी आँखों के सामने...।
मैं अपनी झाँसी को यूँ जलने नहीं दूँगी...।
मैं लडूँगी झाँसी के लिए, मरूँगी मैं झाँसी के लिए।

(रानी अपनी पीठ पर दामोदर राव को बाँधती है – और घोड़े पर सवार हो तलवार हाथ में लिये अंग्रेज़ सेना को पछाड़ती हुई आगे बढ़ती जाती हैं।)

सूत्रधार : रानी बढ़ी कालपी आयी, कर सौ मील निरन्तर पार, घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार, यमुना तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खायी रानी से हार विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार। सखियाँ रानी के संग आयी थीं। युद्ध क्षेत्र में सबने भारी मार मचायी थी।"

दृश्य अट्ठाइस

(रानी सा. मुन्दर से कहती हैं –)

रानी : मुन्दर तुरन्त दूसरा अच्छा और मज़बूत घोड़ा ले आ।

मुन्दर : अभी अस्तबल से मज़बूत घोड़ा लेकर आती हूँ।

(मुन्दर तुरन्त घोड़ा लेकर आती है – इसी बीच दामोदर राव आता है। रानी उसको खाना खिलाती है –)

रघुनाथ सिंह : मुन्दर। रानी साहब का साथ एक क्षण के लिए भी न छूटे। वे आज अन्तिम युद्ध लड़ने जा रही हैं।

रानी : कुँवर साहब। हम जीतेंगे आज। जमकर युद्ध करेंगे। रामचन्द्र देशमुख दामोदर को आज तुम पीठ पर बाँधो। यदि मैं मारी जाऊँ तो ये विधर्मी अंग्रेज़ मेरी देह को छू न पावें...। बस। जल्दी से घोड़ा लाओ।

(मुन्दर घोड़ा लाती है... रानी घोड़े को देखकर कहती है –)

रानी : यह अस्तबल को प्यार करने वाला घोड़ा है। परन्तु अब दूसरे को चुनने का समय नहीं है। इसी से काम निकालूँगी।

(मुन्दर छलकती आँखों से रानी को देखती है – जूही भी अपने आँसू पोंछती है –)

रानी : यह समय आँसुओं का नहीं है मुन्दर। जा, तुरन्त घोड़े पर सवार हो। जूही, अपने तोपख़ाने पर जाओ... आज इन बैरियों को छकाकर ही दम लेंगे।

(रानी अपने घोड़े को एड़ लगाती हैं – घोड़ा हिचकता है – थोड़ी देर बाद गति में आता है। रानी अपनी सेना के साथ अंग्रेज़ों को परे धकेलती जाती है। जूही का तोपख़ाना भी आग उगलता है।)

रानी : तुम लोग यहाँ की स्थिति सँभालो। देखो अंग्रेज़ घुस न पायें। मैं उस ओर जाती हूँ।

(रानी घोड़े पर सवार तलवार चमकाती हुईं...। रानी के पीछे पैदल पलटन है – वह उनसे कहती है... अंग्रेज़ सैनिक तोपख़ाने पर टूट पड़ते हैं। जूही तलवार से उन पर वार करती है, कई गिरते हैं लेकिन... जूही घिर जाती है और मारी जाती है –)

जूही : मेरी रानी सा. के होते तुम लोग झाँसी को कभी नहीं छीन सकते – रानी सा प्रणाम।

(अंग्रेज़ सेना सबको चारों तरफ़ से घेरती जाती है – रानी लक्ष्मीबाई घोड़े की लगाम को अपने दाँतों में थाम, दोनों हाथों से तलवार चलाकर अपने लिए रास्ता बनाती चलती हैं। मुन्दर रघुनाथ सिंह और रामचन्द्र देशमुख भी रानी के साथ हैं।)

गीत

"बुन्देले हरबोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी
ख़ूब लड़ी, ख़ूब लड़ी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

(तात्या टोपे भी अपने घोड़े पर सवार हैं और अंग्रेज़ों के व्यूह को तोड़ता जा रहा है।)

रानी : तात्या देखना। कोई भी वार चूकने न पाये।

(तात्या टोपे के पीछे अंग्रेज़ सैनिक हैं।)

रानी : तात्या, तात्या, तात्या!

(रानी के साथ अब रघुनाथ सिंह, गुल मुहम्मद, रामचन्द्र देशमुख और मुन्दर हैं। रानी सबके लिए रास्ता बनाती चल रही हैं।)

रानी : स्वराज्य की नींव का पत्थर बनने जा रही हूँ।
रघुनाथ सिंह मेरी देह को अंग्रेज़ छूने न पावें।

(रामचन्द्र देशमुख दामोदर राव को लिये उसको बचाते लड़ रहा है...।

रानी को एक संगीन की हूल पड़ती है, वे उसी समय तलवार से उस संगीन वरदार को निशाना बनाती हैं – रानी को ख़ून निकल आता है –)

मुन्दर : बाई सा. मैं...। बाई सा. अपनी झाँसी...।

(गुल मुहम्मद यह बात सुन और ज़ोर से लड़ता है। इसी बीच एक अंग्रेज़ मुन्दर पर पिस्तौल दागता है... रानी उस अंग्रेज़ को तलवार से मारती हैं और मुन्दर के शरीर को सम्हालने को कहती हैं –)

रानी : रघुनाथ सिंह सँभालो मुन्दर को। उसके शरीर को अंग्रेज़ छूने न पावें।

(कह एक साथ दोनों हाथों में तलवार चलाती हुए रानी कई अंग्रेज़ सैनिकों को एक साथ मारती हैं – अंग्रेज़ डरकर पीछे हटते हैं।) (पाँच अंग्रेज़ बचते हैं – गुल मुहम्मद, देशमुख और रघुनाथ सिंह रानी के साथ हैं – रानी बहुत तेज़ तलवार चला रही हैं कि सोनरेखा नाला आ जाता है। रानी घोड़े को एड़ लगाती हैं – लेकिन घोड़ा आगे नहीं बढ़ता... रानी पुचकारती हैं – घोड़ा बिल्कुल अड़ा हुआ है। रानी बहुत प्रयत्न करती हैं लेकिन सब बेकार। इतने में अंग्रेज़ सवार रानी को घेर लेते हैं... और उन पर गोलियों की बौछार करते हैं... इसके बाद भी निरन्तर तलवार से जवाब देती चलती हैं – दूसरा सैनिक आकर तलवार से रानी का सिर धड़ से अलग कर देता है – गुल मुहम्मद दो सवारों को उसी समय मार गिराता है – बाक़ी भागते हैं...)

गीत

रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार।
हाय, घिरी अब रानी थी...।

बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी, खूब लड़ी
वह तो झाँसी वाली रानी थी।
अभी उम्र कुल तेईस की थी,
यनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन
स्वतन्त्रता नारी थी।
खूब लड़ी, खूब लड़ी,
वह तो झाँसी वाली रानी थी।

(रोते हुए दामोदर राव को एक ओर बिठाकर रघुनाथ सिंह रानी को लिटाते हैं – और अपने साफे के टुकड़े से उनके घाव को बाँधते हैं... रानी अचेत अवस्था में हैं – "स्वराज्य" टूटा-फूटा उनके मुँह से उच्चारित हो रहा है...।)

देशमुख : "झाँसी का सूर्य अस्त हो गया।"

(रानी के पास तीनों बैठे हैं... सूर्यास्त होता है... रानी अचेत हो जाती हैं – सब ज़ोर-ज़ोर से रोते हैं – दामोदर राव भी बिलख पड़ता है।)

गीत

जाओ रानी। याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगायेगा स्वतन्त्रता अविनाशी।
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी
हो मदमाती विजय, मिटा दे चाहे गोलों से झाँसी।

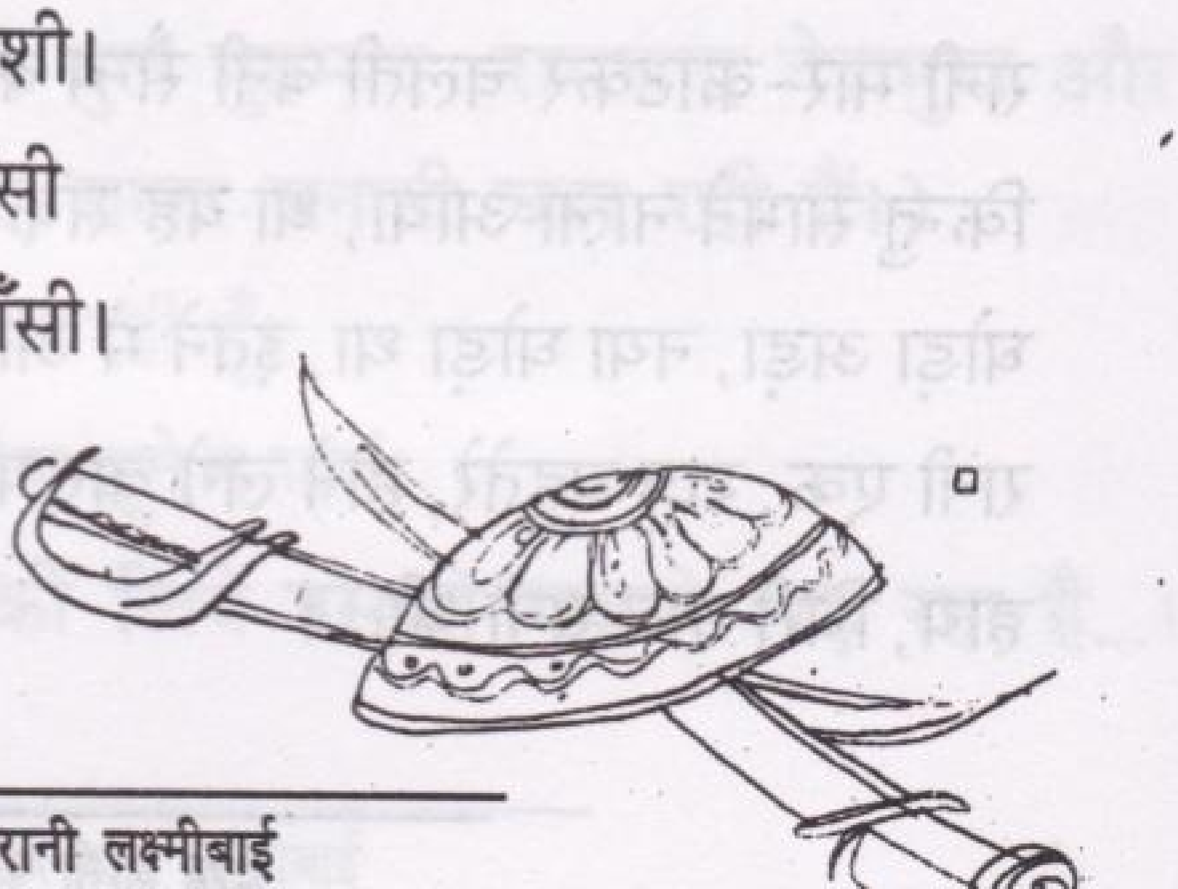

अनुराग ट्रस्ट